



# एग्री आर्टिकल्स

(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)

वर्ष: 06, अंक: 02 (मार्च-अप्रैल, 2026)

[www.agriarticles.com](http://www.agriarticles.com) पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

## कृषि श्रमिक प्रवास और ग्रामीण अर्थव्यवस्था: एक विस्तृत विश्लेषण

डॉ. हरकेश कुमार बलाई<sup>1</sup> एवं सौम्या राज<sup>2</sup>

<sup>1</sup>असिस्टेंट प्रोफेसर, फैकल्टी ऑफ एग्रीकल्चर, जगन्नाथ यूनिवर्सिटी, चाकसू, जयपुर

<sup>2</sup>स्टूडेंट, बी. एससी. (ऑनर्स) एग्रीकल्चर, जगन्नाथ यूनिवर्सिटी, चाकसू, जयपुर

<sup>\*</sup>संवादी लेखक का ईमेल पता: [rsaumya51@gmail.com](mailto:rsaumya51@gmail.com)

**भारत** एक कृषि प्रधान देश है जहाँ की ग्रामीण अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि और उससे संबंधित गतिविधियों पर टिकी हुई है। हाल के दशकों में, ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर कृषि श्रमिकों का प्रवास (Migration) एक महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक घटना बन गया है। यह प्रवास न केवल ग्रामीण जनसांख्यिकी को प्रभावित करता है, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था की संरचना पर भी गहरा प्रभाव डालता है।

### प्रवास के प्रमुख कारण

- कृषि में अनिश्चितता:** मानसून पर अत्यधिक निर्भरता और फसल खराब होने के डर से श्रमिक वैकल्पिक आय की तलाश में शहरों की ओर जाते हैं।
- निम्न मजदूरी दर:** ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि कार्य के लिए मिलने वाली मजदूरी अक्सर शहरों में निर्माण या औद्योगिक क्षेत्र में मिलने वाली मजदूरी से कम होती है।
- मौसमी बेरोजगारी:** कृषि एक मौसमी व्यवसाय है। बुवाई और कटाई के बाद के महीनों में श्रमिकों के पास कोई काम नहीं होता, जिससे वे प्रवास करने के लिए मजबूर हो जाते हैं।

### ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

#### सकारात्मक प्रभाव

प्रवास से प्राप्त 'रिमिटेंस' (Remittance) या भेजा गया धन ग्रामीण परिवारों के जीवन स्तर को सुधारने में मदद करता है। इससे शिक्षा, स्वास्थ्य और ऋण चुकाने की क्षमता में वृद्धि होती है।

#### नकारात्मक प्रभाव

युवा और कुशल श्रमिकों के पलायन से गाँवों में खेती के लिए श्रमिकों की कमी हो जाती है, जिसे 'श्रमिक संकट' कहा जाता है। इससे खेती की लागत बढ़ जाती है क्योंकि किसानों को ऊँची मजदूरी देनी पड़ती है। साथ ही, कृषि कार्यों का 'स्त्रीकरण' (Feminization) बढ़ रहा है, जहाँ पुरुषों के जाने के बाद खेती का पूरा भार महिलाओं पर आ गया है।

### सुझाव और समाधान

- मनरेगा (MGNREGA) जैसी योजनाओं को और अधिक प्रभावी बनाना ताकि स्थानीय स्तर पर रोजगार मिल सके।
- ग्रामीण क्षेत्रों में लघु और कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देना।
- कृषि का आधुनिकीकरण करना ताकि कम श्रमिकों में भी बेहतर उत्पादन संभव हो सके।

**निष्कर्ष**

कृषि श्रमिक प्रवास एक दोधारी तलवार की तरह है। जहाँ यह गरीबी कम करने में मदद करता है, वहीं ग्रामीण कृषि क्षेत्र के लिए चुनौतियाँ भी पैदा करता है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन और कृषि सुधार अनिवार्य हैं।

**संदर्भ**

1. भारत की जनगणना (Census of India) - प्रवास डेटा रिपोर्ट
2. आर्थिक सर्वेक्षण (Economic Survey of India) - कृषि एवं ग्रामीण विकास अध्याय
3. NSSO (National Sample Survey Office) - रोजगार और बेरोजगारी रिपोर्ट
4. अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) - ग्रामीण श्रम गतिशीलता रिपोर्ट
5. नीति आयोग (NITI Aayog) - कृषि नीति और श्रमिक कल्याण दस्तावेज